International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 30-33

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 30-33
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-03-2017
Accepted: 10-04-2017

डॉ. वेद प्रकाश मिश्र
संस्कृत विभागाध्यक्ष
डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

शैलेष कुमार बारमते
शोधच्छात्र, एम. फिल्. (संस्कृत),
डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

Correspondence
डॉ. वेद प्रकाश मिश्र
संस्कृत विभागाध्यक्ष
डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

उत्तररामचरितम् में स्त्री पात्रों का अध्ययन

डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, शैलेष कुमार बारमते

सारांश
उत्तररामचरितम् का कथानक वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड से लिया गया है। अपनी कल्पना के प्रयोग से रामायण के इस चिर–परिचित कथानक को महाकवि ने अत्यंत सरल नाट्यकृति के रूप में रूपान्तरित किया है। संस्कृत साहित्य की विभिन्न परम्पराओं में नाट्य परंपरा अत्यधिक समृद्धशाली रही है लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि संस्कृत के अनेक नाटक आज उपलब्ध नहीं हैं। विदेशी आक्रमणों के कारण संस्कृत साहित्य की अनेको रचनाएं विलुप्त हो गयी हैं।
लगभग 500 ई. पू. भरतमूनि ने नाट्य संम्बंधि लक्षणों की स्थापना की थी तभी से इस नाट्य परंपरा का समुचित इतिहास मिलता है। संस्कृत साहित्य में नाटकों की सजीव तथा अर्मूत परंपरा का अनुवर्तन महाकवि भास से होता है। भास के बाद कालिदास, के बाद भवभूति का समागम एक नाटककार के रूप में माना गया है। भवभूति संस्कृत साहित्य क मूर्धन्य कवियों में से एक हैं। महाकवि भवभूति प्राकृतिक तत्वों में मानवीय संवेदना को अभिव्यक्त करने वाले कवियों ने अद्वितीय नामक तीन नाटक लिखे हैं। निःसन्देह तीनों नाटक सर्वोवत्कृष्ट हैं। भवभूति के नाटकों में उत्तरामचरिम् सर्वाधिक प्रसिद्ध है। उत्तरामचरितम् भवभूति का अंतिम और सर्वोत्कृष्ट नाटक है। इसमें कुल सात अंक हैं।

कुट शब्दः उत्तररामचरितम्, स्त्री पात्रों, संस्कृत साहित्य, सर्वोत्कृष्ट नाटक

प्रस्तावना
महाकवि भवभूति ने अपने रूपकों में पात्रों के चयन पर विशेष ध्यान दिया है। पात्र जितने सजीव, गुणी होंगे नाटक उतना ही सफल सिद्ध होगा उन पात्रों के चारित्रिक विशेषता का निजी महत्व होता है। नाटकार विभिन्न पात्रों के माध्यम से अपने युगीन जीवन का जीता जागता चित्र अंकित करता है। अतः रूपकों में चरित्र चित्रण का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भवभूति के नाटक उत्तररामचरितम् में पुरूष एवं स्त्री पात्रों का वर्णन प्राप्त है किन्तु मैंने अपने शोध पत्र का विषय उत्तररामचरितम् में स्त्री पात्र लिया है। जिसमें स्त्री पात्रों को दो भागों में विभाजित कर उनके विषय में विस्तार से वर्णन किया जायेगा।
भवभूति के नाटक उत्तररामचरितम् के आधार पर हमने उनके सभी स्त्री पात्रों को दो भागों में विभाजित किया है–
1, प्रमुख स्त्री पात्र 2. गौण स्त्री पात्र

1. **प्रमुख स्त्री पात्र** : प्रमुख स्त्री पात्रों के अंतर्गत वे नायिकायें हैं जिनकी कथा पताका के रूप में दूर तक चलती है।

2. **गौण स्त्री पात्र** : गौण स्त्री पात्रों में उन अन्य स्त्री पात्र का दासियां है जिकी कथा प्रकरी के रूप में जल्द ही समाप्त हो जाती है।

प्रमुख स्त्री पात्र
1. **सीता :** सीता उत्तररामचरितम् नाटक की मुग्धा नायिका है, वे भारत की ही नहीं विश्व की एक आदर्श महिला है। महाकवि भवभूति ने उत्तररामचरितम् में सीता निर्वासन का ह्दयाविदारक चित्र उपस्थित किया है। उनको विश्व का भरण–पोषण करने वाली पृथ्वी (वसुंधरा) ने जन्म दिया है। राजा जनक उनके पिता है। वे सूर्यकुल की राजाओं की बहू है। राम को सीता का सब कुछ प्रिय है यदि कुछ प्रिय है तो वह है उसका विरह। सीता का राम के प्रति कितना आगाध प्रेम तथा आदर भाव था इसकी झलक–

तस्मैं कोपिष्यामि यदि तं प्रक्षमाणा आत्मनः प्रभविष्यामि
सीता के इस वचन से मिलती है किन्तु विधि की विडम्बना ऐसी रही की कुलीनता और आचार से साक्षात् देवी सीता को भी श्रीराम की प्रजानुरञ्जन की प्रतिज्ञा में साधन बनना पड़ा। जहां राम, वसिष्ठ, अरून्धती और कौशल्या आदि रानियों द्वारा गर्भवती सीता के लिए पूर्ण सुख सुविधा देने की बात सोची गई थी वहीं उसके विपरीत उनको घनघोर जंगल में कष्ट झेलने के लिए छोड़ दिया गया। अपने अकारण परित्याग के लिए सीता के हृदय का राम के स्नेह की पूर्णता में शंका होना स्वभाविक है।

> अयि कठोर यशः किल ते प्रियं किमयशो ननु धोरमतः परम्।
> किमभवद्विपिने हरिणीदृशः कथय नाथ कथं बत मन्यसे।।[1]

फिर भी सीता की ओर अपने स्नेह की पूर्णता में किसी प्रकार की खिन्नता या कभी नहीं आने पाई है। सीता की सखी वासन्ती ने सीता निर्वासन के लिए जब राम को दोष देती है तब अदृश्य बनी हुई सीता अपने प्राण नाथ राम की इस निंदा को सहन नहीं कर पाती। सीता वासन्ती से कहती है कि–

सखि वासन्तिः त्वमेव दारूणा कठोरा च यैवं प्रलपन्तं प्रलापयसि।[2]
अर्थात् सखी वासन्ती तुम निष्ठुर और कठोर हो जो विलाप करते हुए राम को और रूला रही है। यह कहकर राम के प्रति प्रेम तथा आदर को प्रकट करती है। इस प्रकार तृतीय अंक में सीता का राम के प्रति प्रगाढ़ अनुराग दिखाई पड़ता है–

> हा दैवः एष मया विनाऽहमप्येतेन विनेति स्वप्नेऽपि केन सम्भावितमासीत्।
> तन्मुहूर्तमात्रं जन्मान्तरादिव लब्धदर्शनं बाष्पसलिलान्तरेषु पश्यामि तावद् वत्सलमार्यपुत्रम्।।[3]

सीता कहती हैं कि हा दैवः यह मेरे बिना और मैं इनके बिना रह सकूंगी ऐसी संभावना किसने की थी अर्थात् किसी ने भी ऐसा नहीं सोचा। पलभर में दूसरे जन्म में भी दुर्लभ दर्शन वाले आर्यपुत्र को आंसूओं के बीच देखती हूँ।
सीता वह मन्दभागिनी माता है कि जिसके पुत्र तो हुए किन्तु उन पुत्रों की बाल्यावस्था का सुख न तो उनकी प्रिय राम को ही प्राप्त हो सका और नहीं पूर्णता उसे।

> किं वा मया प्रसूतया येन तादृशमपि मम पुत्रकयोरीषद्विरलकोमलधवलदषनोज्ज्वलक
> पोलमनुबुद्धमुग्धकाकली विहसितं निबद्धकाकशिखण्डकम्
> अमलमुखपुण्डरीकयुगलं च परिचुम्बितमार्यपुत्रेण।[4]

सीता को तो पता है कि मेरे दो पुत्र पैदा हुए हैं और वे वाल्मिकि के आश्रम में पालित–पोषित हो रहे हैं किन्तु राम को इसका भी पता नहीं है एक प्रकार से सीता का दुःख भी राम के ही दुःख की वरह एकान्तिक है।

'चिरस्य परिष्वजेथां मां पुनर्जन्मान्तरगतां जननीम्।[5]
अपने अकारण निर्वासन के लिए सीता के हृदय में राम के प्रति कुछ क्षोभ है परन्तु राम को देखती ही वह मुर्छित हो जाती है।

रामप्रिया
सीता दशरथ नंदन श्री राम की प्रिया है। श्री राम आदर्श नायक है वे उन्हें अतिशय प्यार करते हैं परंतु लोक लाज के कारण उनका शरीर से परित्याग कर देते हैं। श्रीराम उन्हें विस्मृत नहीं कर पाते।

आदर्श पत्नि
सीता आदर्श पति के आदर्श पत्नि है। राम जी के साथ में प्रसन्न है। राम वियोग को वे अपने भाग्य का ही दोष मानती है। पंचवटी में राम के मुर्छित होने पर वे उन्हें होश में लाती है और प्रसन्नता का अनुभव करती है। जब उनकी सखियां राम को उल्टा सीधा कहती है तो बहुत दुखी होती है।

आदर्श माँ
वे प्रकृति का पालन पुत्रवत् करती है। लवकुश का पालन बड़े ढंग से साहस से एवं प्रेम से करती है। एक मां की हार्दिक कामना होती है कि बालक पिता को आनंदित करे सीता जी भी इसी कामना से युक्त है।

पतिव्रता की मूर्ति
सीता की पवित्रता प्रमाणिक है। आज भी उन्हें कई बार निर्दोश सिद्ध कर चुके हैं। देव ऋषिमुनि एवं स्वयं राम भी उन्हें पावन मानते हैं।

दुर्भाग्य से प्रताड़ित
सीता का जीवन कष्टों से भरा पड़ा है। जन्म भी कष्टपूर्ण, विवाह भी कष्टपूर्ण, विवाह के बाद भी जीवन भी कष्टपूर्ण, वनवास, हरण, रावण गृह निवास, अग्नि परीक्षा, फिर वनवास, सीता करूणा की प्रतिमूर्ति है।

'करूणस्य मुर्तिरधवा शरीरिणी विरहव्यधेव वनमेति जानकी।।[6]
इस प्रकार हम देखते है कि सीता का जीवन पतिव्रत की रक्षा के लिए अधिक कष्टमय रहा है परन्तु पति के प्रति अर्थात् राम के प्रति आगाध प्रेम है।

1. **अरून्धति** :– अरून्धति सूर्यकुल में उत्पन्न राजाओं के लिए कुलगुरू महर्षि वसिष्ठ की धर्मपत्नि है उनका चरित्र अत्यंत उदार है। वे सम्पूर्ण ज्ञान गरिमा से सम्पन्न है उन्हें लौकिक व्यवहारों का पूर्ण ज्ञान है। वे अपनी सांसारिक अनुभूति का प्रकाशन करती हुई इस प्रकार कहती है–

   > सन्तानवाहीन्यपि मानुषाणां दुःखानि सम्बन्धिवियोगजानि।
   > दृष्टे जने प्रेयसि दुःसहानि स्त्रोतः सहस्त्रैरिव सम्प्लवन्ते।।[7]

अर्थात् मनुष्यों के अविछिन्न भावों से बहने वाले सम्बन्धियों के वियोग से उत्पन्न दुख प्रियजन के देखे जाने पर दुःसह होते हुए अनंत प्रवाहों से बहने वाले की तरह प्रतीत होते हैं। उन्हें लोकाचार का अच्छा ज्ञान है जब राजा जनक से मिलने के लिए जाते समय महारानी कौशल्या के चरण संकोचवंरा रूकने लगते हैं तब वे इस प्रकार कहती है–

तस्मैं कोपिष्यामि यदि तं प्रेक्षमाणा आत्मनः प्रभाविष्यामि'
अर्थात् मै कह रही हूं कि आपके कुलगुरू का आदेश है कि आपको स्वयं महाराजा जनक के पास जाकर उनसे मिलना चाहिए इसी प्रयोजन से उन्होंने मुझे यहां भेजा है तो पग–पग पर आपका यह कैसा अनुत्साह है। देवी सीता के उत्कर्ष कथन में उनका सात्विक भाव प्रतिबिम्बित होने लगता है। वे कहती है कि –अग्नि ये अक्षर सीता के लिए शुद्र है सीता कहना ही अपने आप में पर्याप्त है। उनके सात्विक उत्कर्ष का सहज रूप इस श्लोक से मिलता है–

> शिशुर्वा शिष्या वा यदसि मम तत्तिष्ठतु तथा,
> विशुद्धेरूत्कर्षस्त्वयि तु मम भक्तिं प्रदयति।
> शिशुत्वं स्त्रैणं वा भवतु ननु वन्द्यासि जगतां
> गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।।[8]

अर्थात् गुरू पत्नि अरून्धति कहती है कि तुम मेरी पुत्री अथवा शिष्या हो जो कुछ भी हो वह संबंध वैसा ही बना रहे किन्तु पवित्रता की पराकाष्ठा तुम्हारे विषय में मेरी भक्ति को दृढ़ बना रही है। तुम सुसुप्त हो अथवा स्त्रीत्व तुम निश्चय ही संसार की पूज्य हो क्योंकि गुणगानों में गुण ही पुजा के स्थान होते है लिंग और आयु नहीं होती।

अरून्धति का स्वभाव सरल एवं सहज है वे सम्पूर्ण जगत का कल्याण चाहती है राम और सीता के प्रति उनके मन में अपार स्नेह है। लव के प्रति वे अपूर्ण वात्सल्य रखती हैं वे नीति शास्त्र में भी चतुर है। राम के द्वारा सीता की स्वीकृति से पहले वे नागरिकों की सहति ले लेती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भवभूति ने अपने उत्तररामचरितम् नाटक में अरून्धति के चरित्र को एक आदर्श पत्नि के रूप में चित्रित किया है।

वासन्ती

वासन्ती वनदेवता की प्रिय सखी है वे अत्यंत नित्तनिपूण और व्यवहार कुशल है। आप्रेयी के दण्डकारण्य में आने पर वे उनके प्रति आदर भाव इस प्रकार प्रकट करती है–

> यथेच्छाभोग्यं वो वनमिदमयं में सुदिवसः
> संता सद्भिः संङःग कथमपि हि पुण्येन भवति।
> तरूच्छाया तोयं यद्यपि तपसां योग्यमशनं,
> फलं वा मूलं वा तदपि न पराधीनमिह वः।।[9]

वासन्ती यहाँ कह रही है कि वन आपके लिए इच्छानुसार उपयोग के लिए है यह मेरे शुभ दिन है। सज्जनों का सज्जनों के साथ मिलना एक तरह का पुण्य होता है। वृक्ष की छाया, शीतल, जल, तपस्या के लिए भोजन फल यहाँ आपके लिए पर्याप्त उपलब्ध ये पराधीन नहीं है।

वासन्ती आत्रेयी की मुख से अपनी सखी सीता के मुख से शापवाद सुनते ही मुर्छित हो जाती है– सीता के प्रति राम के कठोर व्यवहार से वह आश्चर्य चकित हो उठती है जब वे यह सुन लेती है कि यज्ञ में राम हो हिरण्यमयी सीता प्रतिकृति को सहधर्म चारिणी बनाया है। सीता के सुख दुख वासन्ती के अपने बन गये हैं। राम के साथ बातचीत करते हुए वह दण्डकारण्य और पंचवटी के उन्हीं स्थलों और पशु–पक्षियों का स्मरण दिलाती है, जिनसे सीता का सहज संबंध रहा है। वह राम के प्रति अत्यधिक श्रद्धा रखती है इसलिए प्रिय राम के लिए वृक्षों से फल–फूलों के द्वारा, अर्द्ध देने के लिए शीतल जल मन्द सुगंध समीरण से बहने के लिए पक्षियों से मधुर ध्वनि के लिए कहते हैं। सीता के प्रति उनकी सहज अनुरक्ति दिखाई देती है जिसके लिए वे राम को तीक्ष्ण उपालम्भ देने में संकोच का अनुभव नहीं करती है और कह ही देती है–

> अयि कठोर यशः किल ते प्रियं किमयशो ननु घोरमतः परम्।
> किमभवद्विपिने हरिणीदृशः कथय नाथ कथं बत मन्यसे।[10]

अर्थात् हे निष्ठुर तुम्हें निश्चय ही यशप्रिय है किन्तु इससे अपेयस क्या होगा। मृगनयनी सीता का इस जंगल में क्या हुआ हे नाथ बतलाइये इस विषय में आप क्या मानते हैं। ऐसी स्थिति में जब वासन्ती को यह ज्ञात होता है कि राम सीता के वियोग में स्वयं अत्यंत व्यथित है तो उसे उनके प्रति सहानुभूति हो जाती है और वह उन्हें सांत्वना देने लग जाती है। जब राम अपार विरह में निमम्न होकर अपनी चेतना को खो बैठते हैं तो वह उन्हें उच्छवासित करने के लिए सीता को प्रेरित करती हुई कहती है–

> कथमद्यपि नुच्छैवसिति हा प्रिय सखि सीते वासित सम्भाव्यामनो जीवितेश्वरम्। [11]

अर्थात् क्या अभी भी होश में नहीं आ रहे हैं; हे प्रिय सखी सीता कहाँ हो अपने प्राण वल्लभ को सम्मानित करो अंत में राम के दण्डकारण्य आगमन के लिए वह आभार प्रदर्शन करती है और उनके कल्याण की कल्पना करती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि वासन्ती सीता की ओर से उसकी हार्दिक भावनाओं का प्रतिनिधित्व करती है वह अत्यंत ही व्यवहार कुशल नीतिनिपुण एवं उदारमना सीता की प्रिय सखी है जो कि राम और सीता के व्यवहार धन में सामंजस्य की स्थिति ला देती है।

आत्रेयी :– आयेत्री ब्राह्मण जातीय ब्रह्मचारिणी स्त्री हैं। अत्रि गोत्र में जन्म लेने के कारण आत्रेयी नाम से विख्यात हुई। उत्तररामचरितम् नाटक के द्वितीय अंक में वनदेवता वासन्ती द्वारा उनका परिचय पुछे जाने पर वह अपना विस्तृत परिचय प्रस्तुत न करके केवल नाम ही बतलाती हुए कहती है कि –

> अस्मिन्नगस्त्यप्रमुखाः प्रदेशे भूयांस उद्गीथविदो वसन्ति
> तेभ्योऽधिगन्तुं निगमान्तविद्यां वाल्मीकिपाश्र्वादिह पर्ययमि।।[12]

अर्थात् इस पंचवटी प्रदेश में अगस्त्य आदि अनेक उद्गीय को जानने वाले निवास करते हैं उन्हीं लोगों से वेदान्त विद्या को जानने के लिए वाल्मीकि ऋषि के पास से यहां भ्रमण कर रही हूं।

कौशल्या :– कौशल्या राजा दशरथ की पत्नि और श्री राम की माता थी। महाकवि राजशेखर ने श्रीराम की माता कौशिल्या का अपने नाटक बालरामायण में एक हृदयस्पर्शी ममतामयी, करूणामयी, अपने पुत्र की आज्ञाकारिता से प्रसन्न होने वाली और अपने पुत्र एवं पुत्रवधु के विषय में चिंतित रहने वाली माता के रूप में उनका चरित्र चित्रण प्रस्तुत किया है। जब राजा दशरथ के द्वारा श्रीराम के वनवास मांगने पर कौशल्या का हृदय करूणा और दुख से भर जाता है तथा राम की आज्ञाभरिता को इंगित करते हुए कहती है–

> साम्प्रतं स जातराभद्रो दिननाथस्य कुले उत्पन्नो येन
> मायागुरूजनस्यापि शासन निर्वाहणेन बालराधवेश
> भूत्वा जरापरिणत राधवाणां पश्चात् कृतं चरितम्।।[13]

अर्थात् अब दुखीत न होइये रामभद्र सूर्यवंश से उत्पन्न है जिन्होंने मायावी गुरू के आज्ञा का भी पालन कर बालराघव होते हुए भी वृद्ध राघवों के आचरण को भी पीछे कर दिया।

माता कौशल्या, लव के बालरूप को देखकर पुत्र राम की शैशव अवस्था को याद करते हुए तुलना कर कहती है कि–

> सुलभसौख्यं तावद् बालत्वं भवति। अहोः एतेषां मध्ये क एष रामभद्रस्य कौमारलक्ष्मी सदृशैः सावष्टम्भैर्युग्ध ललितैरग्डै.रस्माकं लोचनानि शीतलयति।।[13]

अर्थात् बचपन वास्तव में सुलभ सुखवाला होता है। आश्चर्य है, इनके बीच में यह कौन बहु है जो रामभद्र के शैशवकालीन सुषमा के समान प्रतीत होने वाले, सुगठित, मनोज्ञ एवं सुकुमार अशों से हमारे नेत्रों को शीतल करता है।

माता कौशल्या राम के वनवास जाने पर हर पल की खबर एवं घटना को जानने की उत्सुकता कौशल्या के हृदय में रहती है इसलिए वह पुत्र एवं पुत्रवधु के प्रेम में लीन होकर दूसरी से उनकी खबर लेती रहती है। जिसका सुंदर चित्रण बालरामायण के छठवें अंक में इस प्रकार किया गया है जिसमें कौशल्या के पूछने पर सुमन्त्र प्रति उत्तर में कहती है कि–

> शम्भोमौलौ शषितिलकिते क्लृप्त केलिप्रचारा
> स्त्रोतः सुत्रैः कृतविरचनां भूर्भवः स्वस्त्रयस्य।
> तामुत्तीर्य त्रिदषसरितं लोचनैरश्रुगर्भे,
> रन्तर्वेदीप्रवचन विदं ते पदं प्राप्त वन्तः।।[15]

अर्थात् चन्द्र के तिलक वाले, शंभू तीर पर केलि करने वाली तथा अपने स्त्रोतों के सूत्रों से भू, भवः, स्वः, त्रैलोक्य की रचना करने वाली देव नदी गंगा को पार करके वे अश्रुपूर्ण होकर अन्तर्वेदी के निवासियों के स्थान में पहुंच गये हैं।

इसी प्रकार कौशल्या अपने पुत्रवधु सीता से भी उतना ही प्रेम करती थी इसलिए वह सीता के लिए चिन्तित और दुखित होती है जिसका चित्रण इस प्रकार किया गया है–

कुत्र पूनर्महाराजजातया भूत्वा,
निसर्गदरिद्रगृहिणीत्वं त्वया विक्षितम्।।[16]

अर्थात् कौशल्या कहती है कि हे पुत्री सीता महाराजाओं के राजा की पुत्री होकर भी तुम प्रकृत्या दरिद्र के स्त्री धर्म की शिक्षा कहां से पायी है। इस प्रकार माता कौशल्या का चित्रण एक चिंतित, दुखित और करूणापूज्ज, ममतामयी मां एवं स्त्री के रूप में मिलता है।

2. गौण स्त्री पात्र

1. **तमसा :** एक नदी की अधिष्ठात्री देवी है जो वनवास कालिन सीता को देखकर उसका स्वरूप चित्रण करते हुए मुरला को उनका परिचय कराते हुए कहती है कि–

   परिपाण्डुदुर्बलकपोलसुन्दरं दधती विलोलकवरी कमाननम्
   करूणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यधेव वनमेति जानकी।।[17]

अर्थात् विरह से पूर्णतया पीले एवं कृथ कपोलों से उपलक्षित, फिर भी सुन्दर कपोलों वाले, बिखरे केशों से युक्त मुख को धारण किये हुए यह जानकी मूर्तिमान करूण रस अथवा मूर्तिमयी विरहव्यथा सी पंचवटी में प्रविष्ट हो रही है।

पृथ्वी

वसुंधरा सीता–जननी। सीता का द्वितीय निर्वासन की बात सुनकर भागीरथी से कहती है कि–

देविः सीतां प्रसूय कथमाश्वसिमि?[18]

अर्थात् हे देवि! भागीरथि! सीता को जन्म देकर कैसे धैर्य धारण करू।

सोठश्चिरं राक्षसमध्य वासस्त्यागो द्वितीयस्तु सुदुः सहोउस्याः।।[19]

अर्थात् इस सीता का राक्षसों के बीच का आवास बहुत दिनों तक सह लिया गया, किन्तु यह द्वितीय त्याग अत्यंत दुःसह है।

इस प्रकार पृथ्वी सीता की जननी मानी गयी है।

भागीरथी : नदी की अधिष्ठात्री देवी गंगा।
गोदावरी : नदी की अधिष्ठात्री देवी।
मुरला : एक नदी की अधिष्ठात्री देवी।
विद्याधरी : विद्याधर की पत्नी
प्रतिहारी : अन्तःपुर की द्वारपालिका
शान्ता : राम की बहन श्रृंग ऋषि की पत्नि।

अतः हम कह सकते है कि नाटककार भवभूति उत्तररामचरितम् नाटक के प्रमुख स्त्री पात्रों के चरित्र चित्रण में पूर्णरूपेण सफल हुए है। कथावस्तु के छोटे–छोटे स्त्री पात्रों का भी सप्रयोजन सन्निवेश किया गया है। कोई भी स्त्री पात्र रंग मंच पर निरर्थक नहीं लायी गयी है। भवभूति ने स्त्री पात्रों का यथार्थ चित्रण किया है। उनमें कुत्रिमता का कोई भी चिन्ह नहीं है। प्रत्येक स्त्री पात्र अपनी खास विशेषता एवं व्यक्तित्व रखती है स्त्री पात्रों का चित्रण भवभूति ने इतनी सजीवता एवं वास्तविकता के साथ किया है कि वे सभी स्त्री पात्र सहृदय सामाजिकों को अपने समाज के बी के सदस्य के समान दिखाई देते है। उनका चरित्र चित्रण भारतीय मर्यादा तथा आदर्शों का यथार्थ चित्रण है।

संदर्भ

1. पाण्डेय डॉ. रमाकान्त सन् (2015), उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–2, 3/26, पृ.सं. 189
2. पाण्डेय डॉ. रमाकान्त सन् (2015), उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–2, पृ.सं. 190
3. पाण्डेय डॉ. रमाकान्त सन् (2015), उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–2, पृ.सं. 181
4. पाण्डेय डॉ. रमाकान्त सन् (2015), उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–2, 3/28 पृ.सं. 171
5. पाण्डेय डॉ. रमाकान्त सन् (2015), उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–2, पृ.सं. 38
6. पाण्डेय डॉ. रमाकान्त सन् (2015), उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–2, पृ.सं. 43
7. पाण्डेय डॉ. रमाकान्त सन् (2015), उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–2, 4/8 पृ.सं. 244
8. पाण्डेय डॉ. रमाकान्त सन् (2015), उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–2, पृ.सं. 243
9. पाण्डेय डॉ. रमाकान्त सन् (2015), उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–2, 3/11 पृ.सं. 240
10. पाण्डेय डॉ. रमाकान्त सन् (2015), उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–2, 2/1 पृ.सं. 82
11. पाण्डेय डॉ. रमाकान्त सन् (2015), उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–2, 3/27 पृ.सं. 189
12. पाण्डेय डॉ. रमाकान्त सन् (2015), उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–2, पृ.सं. 206
13. पाण्डेय डॉ. रमाकान्त सन् (2015), उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–2, 2/3 पृ.सं. 83
14. दवे डॉ. समीक्षा, सन् (2003), बाल रामायण, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा–2, 6/16
15. दवे डॉ. समीक्षा, सन् (2003), बाल रामायण, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा–2, 2 पृ.सं. 26
16. दवे डॉ. समीक्षा, सन् (2003), बाल रामायण, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा–2, 6/38
17. दवे डॉ. समीक्षा, सन् (2003), बाल रामायण, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा–2, 6/41
18. दवे डॉ. समीक्षा, सन् (2003), बाल रामायण, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा–2, पृ.सं. 143
19. दवे डॉ. समीक्षा, सन् (2003), बाल रामायण, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा–2, पृ.सं. 413